RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-01
January -2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

रहस्यवादी कवियों की सौंदर्य भावना

डॉ. प्रमिला महानन्दे

जनता महाविद्यालय, चंद्रपुर

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 20 Jan 2020

Keywords
जिज्ञासा - ज्ञान की प्राप्ति की खोज / जानने की इच्छा
अद्वैतवाद - जड़चेतना या आत्मा परमात्मा की एकता
वाग्विलास - आनंदपूर्वक बातचित करना / मौज
तत्वदृष्टा - सृष्टि की उत्पति से संबंधित विद्या
निर्विकार - विकरहित / उदासी

ABSTRACT

जीवन और प्रकृति के क्षेत्र से चयनित अनुभवों से ही कवि बिम्ब निर्माण करता हैं , जिस की दृष्टी जितनी ही सूक्ष्मदर्शी होती है। उतना ही उसका अनुभव क्षेत्र विस्तृत होता है और उसके बिंब में विधान उतने ही उर्वरक , नविन एंव स्टष्ट होते हैं तथा उनके निर्माणार्थ साहित्यकार के लिए वैसी ही चित्रभाषा की आवश्यकता हो जाती है उसी प्रकार के सांकेतिक प्रतीकों की भी।

प्रत्येक साहित्यकार के अंतकरण में भवावास अथवा विचराभास कुछ , धुंधला, अस्पष्ट एंव रूपहीन कवि हृदय को आंदोलित कर देने वाला स्फुरण मात्र होता है। जो संवेदना के रूप में साहित्य - सर्जन का प्रेरक होता है।

मानव एक विचारशील प्राणी है और वह जीवन के प्रति नयी - नयी जिज्ञासाओं से घिरा रहा है। कभी उसे ब्रम्ह के प्रति जिज्ञासा जगती है तो कभी ब्रम्हा की सृष्टि के प्रति , कहने का मतलब यह है की मानव बुद्धि आरंभिक कल से लेकर अब तक जिज्ञासा से ग्रस्त रही है , और संभव है जब तक उसका अस्तित्व है , उसका मन अशांत ही रहेंगा। यथार्थ मानव जीवन की भावनात्मक जटिलताओं की वृद्धि के साथ ही प्रतिकों का अर्थ भावनाएं भी बढ़ती, एंवम जटिल होती आई है। अतएवं हम कह सकते हैं की साहित्यिक प्रतीकों का ऐतिहासिक विकास जातीय जीवन के अनेक सूक्ष्म रहस्यात्मक अनुभवों की शक्ति समेटे हुए है।

प्रस्तावना :-

एक अमर स्त्रोत है जहाँ से मरण धर्म जीवन - नद निकलता है, और घूमकर वही जाता है। जड़तावादी विचारक त्रैतस्वरूप संजनशील, एक जड़ सत्ता मानकर उसे शाश्वत करार देता है, तो दूसरे है, जो "चेतना का सुंदर इतिहास " को "अखिल मानव भावों का सत्य " मानकर कहते है कि वही विश्व के हृदय पटल पर दिव्य अक्षरों में नित्य अंकित हो जाय, दोनों ही उद्गम को शाश्वत मानते है, सत्य " मानकर कहते है कि वही विश्व के हृदय पटल पर दिव्य अक्षरों में नित्य अंकित हो जाय, दोनों ही उद्गम को शाश्वत मानते है, दोनों उसे समरस स्वीकार्य करते है, और द्वन्दात्मकता अथवा विषमता को सृष्टि के लिए आवश्यक बतलाते हुए उसे परम सत्ता की प्रकृति मानते हैं अतएंव जीवन में परिवर्तनशील होकर भी नित्य है, जरामरण तो इसलिए है कि " नित्य नूतनता का आनंद किये है, परिवर्तन में, आनंद तत्व कि ही " "नित्य परिवर्तन " में अभिव्यक्ति होती है।

अतएंव वेदांत ने घोषणा की है कि सामान्य प्राणी अपनी जिज्ञासा को किसी न किसी प्रकार दबा भी लेता हैं | किन्तु कविगण उस जिज्ञासा से इतना अभिभूत हो उठते है कि वे अपने हृदय की इस जिज्ञासावृत्ति का प्रकाश अपनी रचनाओं के माध्यम से भी करने लगते है और यही कारण रहा है कि साहित्य के आरम्भिक काल से ही इस भावना कि अभिव्यक्ति भी काव्य प्रमुख अंग रहा है और संभव है कि जब तक उसका अस्तित्व है, तब तक किसी न किसी रूप में वह अपनी इस भावना की काव्यात्मक अभिव्यक्ति करता रहेंगा।

हिंदी साहित्य के इतिहास को देखते हैं तो रहस्यवाद के दर्शन हमें सभी कालों की कविता में होते है। वैसे तो आदिकालीन काव्यों में भी इस प्रवृति की उपस्थिति की सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता,पर रहस्यवादी वृत्ति के सर्वप्रथम दर्शन भक्तिकाल में स्पष्ट रूप से होते है। इस प्रकार हिंदी में, कबीर, और जायसी को रहसयवाद का आदिकवि माना जा सकता है। आचार्य शुक्ल जायसी को शुद्ध भावात्मक रहस्यवाद का प्रथम दर्शन मानते है। जबकी दूसरे विद्वान् कबीर को हिंदी का सर्वप्रथम रहस्यवादी कवि मानते है शुक्लजी ने रहस्यवाद की परिभाषा इस प्रकार प्रस्तुत की है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

" जो चिंतन के क्षेत्र में अद्वैतवाद है, वही भावना के क्षेत्र में रहस्यवाद है। "

कबीर ने अपनी रचनाओं में स्थान - स्थान पर अपनी रहस्यवादी प्रवृत्ति का परिचय दिया है। अत: वे पहुँचे हुए साधक थे। तथा उनकी उक्तियों में वाग्विलास - मात्र है, बल्कि हृदय की सच्ची जिज्ञासा और प्रियतम से मिलने की तीव्र लालसा को ही शब्द मिले है। कबीर की उक्तियों को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है की उनकी उक्तियों में विश्वास की एक छाप मिलती है, जो यह सिद्ध कर देती है कि उनकी रहस्यवादी उक्तियाँ वास्तव में ही उनके हृदय से मिलती है। कबीर की कुछ पंक्तियों के संदर्भ उपयुक्त कथन की सच्चाई देखी जा सकती है।

" लाली मेरे लाल की जित देखो तित लाल
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल "

कबीर निर्गुण ब्रम्हा के उपासक थे। फिर भी वे उनसे तरह - तरह का संबंध जोड़कर उनसे निकटता स्थापित करते थे। हमें यह स्मरण है, कि कबीर का रहस्यवाद उनकी प्रकृति की उपज है, वह अपने जीवन में जिस तथ्य को अच्छी तरह से अनुभूत कर चुके थे। उसे ही उन्होंने अपने काव्य में व्यक्त किया है। अत: कबीर ने रहस्यवाद का सच्चा रूप मिलाया है। यह संभव है कि कबीर के रहस्यवाद और जायसी के रहस्यवाद में असमानता प्रतित हो, किन्तु दोनों में कोई अंतर नहीं है। सूफियों में प्राप्त रहस्यवाद का उत्कृष्ट रूप जायसी में प्राप्त होता है। आत्मा परमात्मा, परमात्मा से मिलने के लिए किस प्रकार व्याकुल रहती हैं। " पद्मावत " में पद्मावती ब्रम्ह तथा रत्नसेन की आत्मा का प्रतिनिधित्व करते हैं, आत्मा परमात्मा से मिलने के लिए कितनी बाधाएँ पार कर अंतत: अपने लक्ष्य को प्राप्त करती है। इसका सुंदर चित्रण जायसी ने रत्नसेन के चरित्र द्वारा किया है। पद्मावत में जायसी ने अपने आध्यात्मिक दृष्टिकोण को इस उदा. के द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया है। जो कि रहस्यात्मक प्रवृत्ति का एक सुंदर उदाहरण है।

तन चित उन मन राजा कीन्हा।
हिय सिंघल, बुद्धि पद्मिनी चीन्हा।।
गुरु सुआ जेही पंथ दिखावा।
बिना गुरु को निर्गुण पावा।
नागमती एहि दुनियाँ धंधा ।
कोंचा सोइन एहि चित्त बांधा ।
प्रेम कथा एहि भाँति विचारहु।
बुझि लेहु जो बुझै पारहु।

जायसी ने अपने पद्मावत में रहस्यवाद की बड़ी ही सफल अभिव्यक्ति की है। कुछ विद्वान उपर्युक्त पंक्तियों को अप्रमाणिक मानते हैं। फिर भी पद्मावत में निबद्ध रहस्यवाद अत्यंत सफल कोटी का है।

तुलसीदास सगुणमार्गी कवि थे, किन्तु उन्होंने विनय पत्रिका की निम्न पंक्तियों में रहस्यवाद की सुन्दर अभिव्यक्ति की है, ऐसा कुछ आलोचकों का मत हैं|

केशव कहि न जाय का कहिये।
देखत तब रचना विचित्र हरी ,समुझि मनहिं मन रहीए ||
शून्य भीति पर चित्र, रंग नहीं, तनु बिनु लिखा चितेरे।
धोये मिटर न मरइ भीति, दुःख न पाइए एहि तनु तेरे।।
रविकर - नीर बसै अति दारुन मकर रूप तेहि माहीं।
बदन - हीन सो ग्रसै चराचर,पान करन जे जांहि ।
कोड कह सत्य झूठ कह कोऊ, जुगल प्रबल कोऊ माने ||
तुलसीदास परिहरै तीन भ्रम, तो आपन पहिचानै।।
केश कहि न जाय का कहिये।
देखत तब रचना विचित्र हरि ! समुझि मनहि मन रहिए।।
शून्य भीति पर चित्र, रंग नहीं तनु बिनु लिखा चितेरे।
धोये मिटत न मरइ भीति, दुःख मकर रूप तेहि माही
कोड कह सत्य झूठ कह कोऊ, जुगल प्रबल की उमने
तुलसीदास परिहरै तीन भ्रम, तो आपन पहिचानै।।

मीरा में भी रहस्यवाद के दर्शन यंत्र-तंत्र होते है, किन्तु स्मरणीय है कि सगुणवादी कवियों में रहस्यवाद के दर्शन स्पष्ट रूप से नहीं होते। रीतिकालीन कवियों में घनानंद आदि में ही रहस्यात्मकता प्राप्त होती है। पर सच्चे अर्थो मधयकालीन साहित्य में कबीर, जायसी में ही रहस्यवाद के दर्शन होते हैं। आधुनिक काल प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा, रामकुमार, अज्ञेय, अदि कवियों में पुन: रहस्यवाद के दर्शन होते हैं। किंतु महादेवीजी की रचनाओं को ही सच्चे अर्थो में इस कोटी में रखा जा सकता है किंतु कबीर और जायसी केवल बौद्धिक ही नहीं बल्कि वे आचरण, विश्वास और चिंतन से भी उस अवस्था को प्राप्त कर चुके थे, जहाँ पहुंचने पर साधक ब्रम्ह से भी एकत्व का सच्चे अर्थो में अनुभव कर पते थे। कबीर और जायसी की रहस्यात्मक उक्तियाँ इसलिए अधिक प्रभावशाली भी है। क्योंकि वे साधक के अंतकरण से निकले उद्गार है तथा उनकी सच्चाई पर प्रश्न चिन्ह लगाया जाना संभव नहीं। छायावादी कवियों के जीवन में मध्यकालीन संतों की आध्यात्मिक साधना ही कवियों के रहस्यवाद को केवल बौद्धिक रहस्यवाद ही मानकर अध्य्यन करते है। आधुनिक कवियों ने कुछ रहस्य परक उक्तियाँ सुंदरऔर प्रभावशाली है। इसका कारण है उनका

RRIJM 2015, All Rights Reserved

विस्तृत अध्य्यन और वैज्ञानिक उन्नति के कारण जगी विश्वबंधुत्व की भावना तथा विश्व के अनेक रहस्यों का ज्ञान आज के बुद्धिवादी व्यक्ति के लिए मध्य युगीन भक्तों की आस्था की प्राप्ति अधिक कठिन है। अत: कवियों का सुझाव भी निर्गुण ब्रम्ह के प्रति होना भी अत्यंत स्वाभाविक है।

तेरे प्रकाश में चेतन संसार वेदना ज्याला,
मेरे समीप होता है पाकर कुछ करुण ज्वाला
चित दग्ध दुखी यह वसुधा आलोक माँगती तब भी,
तुम तुहिन बरस दो कन-कन, यह पगली सोये अब भी

इसी प्रकार निराला की " तुम और मैं " कविता में भी रहस्यवाद की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। निराला की रहस्यात्मक अभिव्यक्ति को शुक्लजी ने सही अर्थो में रहस्यवाद की बड़ी ही सरल और सटीक अभिव्यक्ति हुई है। जो मीरा के बाद सर्वप्रथम इन्ही में मिलती है। महादेवी की रहस्यपरक उक्तियाँ अत्यंत मर्मस्पर्शी है।

"विणा भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ ----!
"जो तुम आ जाते एक बार ----!
"रजत रश्मियों की छाया में धूमिल ----!
"कौन तुम मेरे हृदय में ----!
"मुस्कराता संकेत भरा नभ ----!

इस गीत में महादेवी पाठकों को एक दिव्य रहस्य साधिका सी प्रतित होती सी दिख रही है। आलोचकों ने इस प्रकार की उक्तियों पर प्रश्न चिन्ह भी लगाये है। किन्तु एक मात्र महादेवी ही आधुनिक कल के कवियों में अपने प्रकृत भूमि से नहीं हटे बल्कि पंत, रामकुमार वर्मा, निराला, अज्ञेय आदि कवि बार - बार अपना क्षेत्र बदलते रहे है।

"जिसको अब तक समझे थे सब, जीवन में परिवर्तन अनंत,
अमरत्व वही अब भूलेगा, तुम व्याकुल उसको कहो अंत। "

कवि चाहे अनुभूति से बुद्धि में आये, चाहे बुद्धि से अनुभूति में उतरने को विवश कर दिया जाय, जब दैनंदिन अस्त - व्यस्त जीवन के दिपते - बुझते कणों के लौकिक परिवर्तन को नगण्य बनाकर वह उसके अंतरंग में घुसते - घुसते सभी माया मंडलों को पार करके नि: सीम में जा पहुँचता है, तब सच्चा कवि बन जाता और-------

"चेतन का साक्षी मानव हो निर्विकार हँसता - सा ,
मानस के मधुर मिलन में गहरे - गहरे धँसता - सा।

वह जो कुछ कहता है वही अनंत का संगीत बन जाता है। उसी अवस्था में पहुँच कर तत्वदृष्टा कबीर सात्वना देते है

" हे शंख ! रात्रिद्वारा तू प्रिय से दूर - वियुक्त है, इसका संताप मत कर,
धैर्य रख ! सूर्य को उदय होते ही देवालय - देवालय में तू ही अपनी ध्वनि व्याप्त कर देगा

यही तत्वज्ञान वह प्रेरक है जो रहस्य काव्य का अधिष्ठान है। "ज्ञान" और "भाव" दोनों को संभालने वाली भाषा काव्य की ही हो सकती है, क्योंकि "भाव" भाव का आधारभूत है और काव्य भाव को प्राथमिकता देता है, परन्तु स्पष्ट बोधगम्यता के लिए भाषा उत्तरोत्तर पारिभाषिक रूढ़ि अपनाने को विवश हुई इधर काव्य निर्मुक्त होकर रहस्यधारा से प्रच्युत हो चली। कविता के लिए यह इतिहास - चाहे पोषक मन लिया जाय, पर भावप्रधान जन - जीवन के लिए इस प्रवृत्ति को अभिशाप मानना चाहिए|

निष्कर्ष : -

जँहा तक रहसयवाद के मूल्यांकन की बात है भले ही आज के प्रगतिवादी आलोचक उसमें पलायन का दर्शन करे शाश्वत वृत्ति है। जो सभी युग के काव्य में रही है। तथा आगे भी सर्वदा रहेगी जँहा तक इसकी काव्यात्मक अभिव्यक्ति के औचित्य और सच्चाई की बात है यह कवी की क्षमता पर निर्भर है।

दार्शनिक तथा काव्यगत रहस्य में अंतर पहले ही देखा जा चूका है कि वेदों,में विज्ञान, दर्शन काव्य का मिश्र रूप था जो आगे यथावत रह न सका। उपनिषदों में ही कला गौण होने लगी थी और अभिव्यक्ति के शब्द चित्रात्मकता में से होते हुए बौद्धिक पारिभाषिकता लेने लगी थी। पारिभाषिक शब्द "स्थित " अर्थ देने लगता है तो उसमे काव्योपयोगी गत्यात्मकता मन्थर हो जाती है, अत: कवि मूल चित्र भाषा को अपनाये हुए अलग हो गया। सूत्रों में आकर जब भाषा और भी बौद्धिक हो गई तो काव्य की सत्ता सर्वात्मना पृथक हो गई। परन्तु अब भी काव्य ,जो पुराणों में और रामायण - महाभारत में है, लौकिक न बन पायी, उसने अलौकिकता को ही लोकवैध बनाने का कार्य हाथ लिया। फिर भी दर्शन और काव्य दो हो गए। नाथ, सिद्ध ,संत, सूफी संत आदि कवि अपने काव्यों में वही मूल रूप बनाये चल रहे हैं।

भारतीय दर्शन जिसे आनंदमय कोश कहता है, कविता द्वारा ही सौन्दर्यानुभूति का स्त्रोत कम से कम वही है। रहस्यानुभूति पर विचार करते है तो पाते है कि,साधारण सौंदर्यनुभूति कि अपेक्षा रहस्यानुभूति का धरातल उच्च होता है उसे " अनुत्तर " कहते है। जिसके आगे कुछ नहीं। यह रहस्यानुभूति निश्चय उच्चकोटि कि सौंदर्यनुभूति ही है पर उसकी वृत्ति सूक्ष्मतर व्यापक ऐंव लौकिकता निरपेक्ष होती है,

RRIJM 2015, All Rights Reserved

फिर भी उस अनुभूति के धरातल पर मनुष्य रह सकता है, रहता आया है, इसमें संदेह नहीं, वह धरातल अनेक प्रकार के हो सकते है।

दार्शनिक और कवि अपना क्षेत्र वहाँ मानते है जहाँ तक वाणी और बुद्धि कि नहीं, जहाँ " प्रतिभाप्रत्यय " ही कवि का लक्ष्य है। जहाँ दुःख से असंपृक्त आनंद निवास करता है वह है अंतकरण और यही अंतकरण मन से मन के मिलन की अवस्था को दर्शाता है|

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. आधुनिक हिंदी काव्य भाषा डॉ. रामकुमार सिंह
2. आधुनिक हिंदी कविता ध्वनि डॉ. कृष्णलाल शर्मा
3. सुर का काव्य-वैभव डॉ. मुंशीराम शर्मा
4. संत साहित्य डॉ.प्रेमनारायण शुक्ल
5. छायावाद : काव्य तथा दर्शन
6. स्वछन्तावादी काव्यधारा का दार्शनिक विवेचन डॉ. जगदीश गुप्त
7. विध्यापति कमलकांत पाठक

RRIJM 2015, All Rights Reserved